ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-6* Issue-1* April-2021
Anthology : The Research

यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' के उपन्यासों मे निहित मानवीय मूल्यों का शिक्षा में योगदान

Contribution of Human Values Contained in The Novels of Yadvendra Sharma 'Chandra'

Paper Submission: 01/04/2021, Date of Acceptance: 16/04/2021, Date of Publication: 25/04/2021

नरेश कुमार
शोधार्थी,
हिंदी विभाग,
सिंघानिया विश्वविद्यालय,
पचेरी बड़ी, झुंझुनू,
राजस्थान, भारत

सारांश

समाज के विकास में मूल्यों को ही आर्दश मान्यता, सामाजिक आचार संहिता, आकांक्षा और कल्याणकारी रास्ता माना हैं।यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' एक सशक्त उपन्यासकार रहे हैं। उनका बहु आयामी व्यक्तित्व एवं कृत्तित्व प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार के रूप में विख्यात है। उपन्यास साहित्य में मनुष्य जीवन के सभी पक्षों का यथार्थ चित्रण होता है।

भारतीय वंश में स्थापित संस्कृति व सभ्यता में निहित मूल्यों का समावेश ही भारतीय संस्कृति का पोषक रहे हैं। ये जीवन मूल्य भारतीय संस्कृति का पोषक रहे हैं। मूल्य कुछ ऐसे विकसित और प्रतिमान हैं जो जीवन में अपनाई जाने वाली आचार संहिता के अंग बनते हैं।उपन्यासकार उपन्यास में विविध परिवेशों का चित्रण करता है। यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' एक सशक्त उपन्यासकार रहे हैं। आज उपन्यास एक प्रभावशाली विधा होने के साथ–साथ समसामयिक व सदियों से चले आ रहे विभिन्न आडम्बरों को भी उद्द्यृत करता है।

उन्होंने अपनी उपन्यासों के माध्यम से समाज की व्यवस्था का चरित्र चित्रण कर समाज में व्याप्त निहित मूल्यों के गिरते स्तर की रूपरेखा प्रस्तुत की हैं।

In the development of society, values are considered as ideal recognition, social code of conduct, aspiration and welfare path. Yadavendra Sharma 'Chandra' has been a strong novelist. His multi-dimensional personality and creativity is known as a talented litterateur. In novel literature, there is a realistic depiction of all aspects of human life.

The incorporation of values inherent in the culture and civilization established in the Indian lineage has been the nurturer of Indian culture. These values of life have been the nurturer of Indian culture. Values are some of the developed and patterns that become part of the code of conduct to be followed in life. The novelist portrays different environments in the novel. Yadvendra Sharma 'Chandra' has been a strong novelist. Today, the novel, along with being an influential genre, also refers to the various rhetoric that has been going on for centuries.

Through his novels, by portraying the system of society, he has presented an outline of the declining level of the inherent values prevailing in the society.

मुख्य शब्द : मानवीय मूल्य, उपन्यास, शिक्षा, समाज।
Human Values, Novels, Education, Society.

प्रस्तावना

भारत वंश वैदिक एवं पौराणिक युग से ही मानव तथा मानवता के संबंधों को लेकर निर्विवाद रहा है। यहाँ तक कि महान् विचारक डॉ. राधाकुमुद मुखर्जी ने सन् 1952 में ग्वालियर कॉंग्रेस के सभापति पर से बोलते हुए कहा था कि मनुष्य भारत में ही उत्पन्न हुआ था और इस देश की सभ्यता से ही विकसित हुआ है। हिन्दी एवं राजस्थानी साहित्य में सामाजिक चेतना एवं शोषित वर्ग के विमर्श को लेकर अनेक विधाओं में साहित्य सर्जन हुआ है।

उनका बहु आयामी व्यक्तित्व एवं कृत्तित्व प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार के रूप में विख्यात है। उन्होंने उपन्यास, कहानी, नाटक, लघुकथा, पटकथा संवाद, संस्मरण, एकांकी आदि विविध विद्याओं में सार्थक प्रभावशाली एवं क्रांतिकारी सृजन किया है। इस कथन का आशय इस बात का संकेत करता है

कि इस देश में केवल व्यक्ति के जीवन काल को लेकर ही चिन्तन नहीं हुआ अपितु उनकी संस्कृति, सभ्यता और विकास के विविध प्रतिमानों पर भी गणवेशणाएँ कि गई थीं। जीवन मूल्यों का विवचन धर्म, संस्कृति और साहित्य के साथ–साथ विज्ञान और उपयोगी विषयों में किया जाता रहा है और उसी दृष्टि से उनकी सम्प्रति और अवधारणाएँ बनती रही हैं। भारतीय दार्शनिक डॉ. देवराज ने संस्कृत का दार्शनिक विवेचन पृष्ठ 160 पर मूल्यों को आदर्श, मान्यता, सामाजिक आचार संहिता, आकांक्षा और कल्याणकारी रास्ता माना है। परन्तु जब हम मूल्यों का सार्वभौमिक विशलेषण करते हैं तो हमारे सामने एक अन्य विचारधारा भी रहती है। जिसका चित्रण यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' ने बखूबी किया है। चूंकि वे स्वयं राजस्थान के बीकानेर के रहने वाले थे। अतः उन्होंने इस व्यवस्था को अत्यन्त निकट एवं प्रभावी रूप से देखा था। इसलिए उनका लेखन अत्यधिक सटीक एवं प्रभावोत्पादक बन पड़ा है। 'यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' के उपन्यासों केअध्ययन के बाद निम्न मानवीय मूल्य पाए गए – ईमानदारी, धैर्य, सहिष्णुता, सहानुभूति, सच्चाई, यथार्थ वास्तविकता आदि पाई गई।

अध्ययन का औचित्य एवं महत्व

'यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' के उपन्यासों केवल औपचारिक दृष्टि से छात्रों को पढ़ाई जाने वाली विद्या ही नहीं अपितु उनमें अन्तर्निहित मूल्यों के निरूपण की अपेक्षा भी उसमें निहित हैं। परंतु अनौपचारिक जीवन की धारा से अभिसिंचित होने के लिये उन्हें हम आज भी प्रसंगित तथा महत्वपूर्ण मानते हैं।

भारतीय सामाजिक व्यवस्था में वर्ण विभाजन और जातीय भेद मुखर रहा है। जिसका प्रभाव भारतीय समाज पर दिखाई देता है। यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' ने इस व्यवस्था के खिलाफ बहुत मुखर आवाज उठाई और शोषित वर्ग को एक नई दिशा देने का प्रयत्न किया। इनकी रचनाओं में सामंती व्यवस्था के खिलाफ एक सशक्त विरोध प्रदर्शित होता है। इस कारण छूआछूत, अशिक्षा, अंधविश्वास, रूढ़ियां, वर्ग–जाति–वर्ण–सम्प्रदाय का विद्वश भारत में बढ़ता जा रहा था। किसी न किसी सीमा तक उसकी निशानियां आज भी भारतीय सभ्यता, संस्कृति में विद्यमान है और कभी–कभी दावानल बनकर पूरी मानवता को भस्मसात करने लगती हैं। आज भी भारतीय समाज में कट्टरपंथी एवं उन्माद फैलाने वाले अराजक तत्वों की कमी नहीं है। इसके पीछे प्रमुख कारण है सम्पूर्ण शिक्षातंत्र का निरूद्देश्य कार्य करना, निर्बल होना। हम आज भी मानव की मूलभूत समस्या से परिचित नहीं हो पा रहे हैं। चाहे वह शैक्षिक व रोजगारी हो, चाहे शिक्षा का औद्योगिकीकरण, बाजारीकरण हो।

शिक्षा जगत में आज भी माफियों का प्रभुत्व है। अर्थ शोषण के सामने शैक्षिक चुनौतियों का सामना करने की धारणा और प्रयास का लोप हो रहा है।

अध्ययन का उद्देश्य

हिन्दी के सशक्त रचनाकारों की पीढ़ी में यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' का नाम अग्रणी है। उन्होंने अनेक विषयों एवं विविध विद्याओं में लेखन कर अपनी बहुमुखी प्रतिभा का परिचय दिया है। उनका साहित्य जीवन की संकुचित वृत्ति का उद्घोष करने वाला है। उनकी कहानियों का कथानक सहजता, सद्इच्छा तथा मानवीय संवेदना की पृष्ठभूमि पर केन्द्रित है। उनके उपन्यास साहित्य में सामंती परिवेश, वर्ग विभाजन, छुआछूत व वंचितों का शोषण स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है अर्थात् उनके उपन्यासों का केन्द्र बिन्दु सामाजिक चेतना एवं शोषण के विरूद्ध संघर्ष है।

समस्या कथन

''यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' के उपन्यासों मे निहित मानवीय मूल्यों का शिक्षा में योगदान''

इस शीर्षक से सतही तौर पर सही स्पष्ट होता है कि यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में उपन्यासकारहै जिनकी उपन्यासों में सत्य, अहिंसा, प्रेम, दया करना आदि की बातों पर विचार करना है। परन्तु यह शोध की दृष्टि से एकांकी चिंतनद ही होगा।

अध्ययन का परिसीमन

यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'केप्रमुख 22 उपन्यासों को पढ़कर मानवीय मूल्य तथा शिक्षा पर अध्ययन किया गया।

अध्ययन की विधि

इस अनुसंधान में दार्शनिक विधि के साथ–साथ ऐतिहासिक तथा विवरणात्मक विधि का प्रयोग किया गया।

समाहार

प्रस्तुत अनुसंधान यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' के उपन्यासों में मानवीय मूल्यों की शिक्षा में मूल्य तथा शिक्षा के साथ–साथ अनुसंधान के महत्व, औचित्य, उद्देश्यों को भली–भाँति प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

विद्यार्थियों के दृष्टिकोण से

मूल्यों का शैक्षिक निष्पति में बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। मूल्यों के द्वारा ही विद्यार्थियों के व्यवहार निर्धारित होते हैं। यदि हम छात्रों के मूल्यों को जानते हैं, तो उनके व्यवहारों को बता सकते हैं।

शिक्षकों के दृष्टिकोण से

वर्तमान समय में छात्रों में कौन–कौन से मूल्य विकसित करने की आवश्यकता है, यह बात इस अध्ययन से ज्ञात हो जाती है। इस अध्ययन से छात्रों के व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन लाया जा सकता है।

सामाजिक दृष्टिकोण से

समाज के मूल्यों में आई गिरावट एक सार्वजनिक समस्या बन गयी है। अतः विद्यार्थियों में मूल्यों की गिरावट को रोकना होगा। साथ में उनमें अच्छे मूल्यों का विकास करना होगा।

राष्ट्रीय दृष्टिकोण से

भविष्य में विद्यार्थियों के हाथ में ही राष्ट्र व प्रशासन की बागडोर होगी। अगर बच्चों में मूल्यों का विकास होगा, तो राष्ट्र का भविष्य अच्छा बनेगा।

तथ्य विश्लेषण

प्रस्तुत शोध में उद्देश्यों की प्राप्ति हेतू, शोधकर्ता ने जो तथ्य एकत्रित किये उनका विश्लेषण इस प्रकार दिया गया है।

सर्वप्रथम तथ्यों के अन्तर्गत मूल्य निकाले गये तथा मूल्यों में से उपमूल्य निकाले गये। इसके व्यक्तिक मूल्यों का विभिन्न मूल्यों सामयिक मूल्यों, शैक्षिक मूल्यों, राजनैतिक मूल्यों को निकाला गया।

शैक्षिक निहितार्थ

विद्यार्थियों को पोषित करने वाले निहितार्थ

1. मूल्यों के विकास में विद्यालय, समाज एवं परिवार को अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी।
2. मूल्य परक शिक्षा से व्यक्तित्व निर्माण होगा।
3. मूल्य परक शिक्षा से व्यक्ति में सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक एवं आध्यात्मिकता का विकास होगा।
4. एक स्वस्थ एवं सुदृढ़ समाज का नव–निर्माण होगा।
5. प्राचीन संस्कृति का पुनरूद्वार होगा।

निष्कर्ष

यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' के उपन्यासों में मानवीय मूल्यों की शिक्षा में मूल्य तथा शिक्षा के साथ–साथ अनुसंधान के महत्व, औचित्य, उद्देश्यों को भली–भाँति प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।आज भी भारतीय समाज में कट्टरपंथी एवं उन्माद फैलाने वाले अराजक तत्वों की कमी नहीं है। इसके पीछे प्रमुख कारण है सम्पूर्ण शिक्षातंत्र का निरूद्देश्य कार्य करना, निर्बल होना। हम आज भी मानव की मूलभूत समस्या से परिचित नहीं हो पा रहे हैं। चाहे वह शैक्षिक व रोजगारी हो, चाहे शिक्षा का औद्योगिकीकरण, बाजारीकरण हो।

शिक्षा जगत में आज भी माफियों का प्रभुत्व है। अर्थ शोषण के सामनेशैक्षिक चुनौतियों का सामना करने की धारणा और प्रयास का लोप हो रहा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *त्रिपाठी विश्म्बरनाथ – स्वतन्त्रता व संस्कृति।*
2. *गुलाब राय – भारतीय संस्कृति की रूपरेखा।*
3. *'चन्द्र' यादवेन्द्र शर्मा –ढोलन कुंजकली।*
4. *'चन्द्र' यादवेन्द्र शर्मा – चांदा सेठानी।*
5. *शर्मा डॉ. मोहिनी – हिन्दी उपन्यास और जीवन मूल्य।*
6. *यशपाल – शोषक श्रेणी के प्रपंच : गांधीवाद की शव परीक्षा।*
7. *'चन्द्र' यादवेन्द्र शर्मा – हजार घोडो पर सवार।*
8. *प्रो. हुमायु कबीर – हजारो परम्परा।*
9. *पानेरी, हेमेन्द्र कुमार – स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास।*
10. *शर्मा एस. आर. – आधुनिक भारत निर्माण।*
11. *नागर अमृत लाल – बूंद और समुद्र।*
12. *यशपाल –झूठा–सच।*
13. *आचार्य नरेन्द्र देव – राष्ट्रीयता और समाजवाद।*
14. *'चन्द्र' यादवेन्द्र शर्मा – प्रजाराम।*
15. *'चन्द्र' यादवेन्द्र शर्मा – बहुरूपिया।*
16. *'चन्द्र' यादवेन्द्र शर्मा – गुलाबड़ी।*
17. *डॉ. श्री नाथसहाय – सफेदपोश : भारतीय मध्यमवर्ग एक समाज शास्त्रीय अध्ययन।*
18. *वर्मा धीरेन्द्र – हिन्दी साहित्य कोश।*
19. *भूपेन्द्र भूप सिंह – मध्यवर्गीय चेतना और विकास।*